

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद् (हिन्दी परिशिष्ट)

खंड २०]

दिसम्बर १९६८

[अंक २

अनुक्रमणिका

१. द्वि-अवसर प्रतिचयन पर एक टिप्पणी
(जे० एन० के० राव तथा हिसाकोशिमीर जुगवा) iii
२. फलीसिज के वर्गीकरण में भेदमूलक तकनीकें
(यू० जी० नडकर्णी, आई० ए० आर० एस०, नई दिल्ली) iii
३. ईख की उपज के वक्र रेखीय सम्बन्ध का अध्ययन फसल
लक्षण फलनों के गुणनफल के रूप में (ए० एन० बसु) iv
४. जबकि परिसर प्राचल पर निर्भर हो तो सम्भागिता
अनुपातीय जाँच का शक्ति फलन
(एम० सी० जैसवाल तथा सी० जी० खतरी) v

द्वि-श्रवसर प्रतिचयन पर एक टिप्पणी

जे० एन० के० राव तथा हिंसाकोशिमीर जुगवा

टैक्सस ए या एम विश्वविद्यालय तथा अतारू वाणिज्य विश्वविद्यालय

सारांश

दो श्रवसरों पर प्रतिचयन योजना के अर्न्तगत, अन्तर प्राक्कलक, संयुक्त-प्राक्कलक तथा उत्तम प्राक्कलक पर विचार किया गया है। एक सरल लागत फलन, जिसमें कि उभयनिष्ठ तथा विभिन्न इकाइयों पर लागत बराबर होना आवश्यक नहीं है, के प्रयोग द्वारा इन प्राक्कलकों की दक्षताओं की तुलना की है। यह ज्ञात हुआ है कि कुछ स्थितियों में उत्तम प्राक्कलक की दक्षता तथा अन्तर प्राक्कलक एवम् संयुक्त प्राक्कलक की दक्षताओं में बहुत कम अन्तर होता है।

फ़लीसिज के वर्गीकरण में भेदमूलक तकनीकें

यू० जी० नडकर्णी

आई० ए० आर० एस०, नई दिल्ली

सारांश

फ़लीसिज के विभिन्न दर्जों में भेद करने की वस्तुनिष्ठ विधि निकालने के लिये विवेचन फलनों का प्रयोग चार श्रेणियों में विभाजित फ़लीसिज के लक्षणात्मक गुणों सम्बन्धी आँकड़ों पर किया गया है। यह दर्शाया गया है कि तन्तुक लम्बाई तथा मेदावृत तन्तु को प्रतिशतता से तन्तु व्यास तथा प्रति सेन्टीमीटर गुलफ़टों की संयुक्त भेद-मूलक योग्यता नहीं बढ़ती। पीछे दिये गये गुणों के माध्यों की एक घातीय जाँच से पता चला कि फ़लीसिज को चार श्रेणियों में बाँटने के लिये केवल एक भेदमूलक फलन प्रयोग नहीं किया जा सकता तथा इसके लिये द्विधात्व विवेचन विधि अपनाई जानी चाहिये।

ईख की उपज के वक्र रेखीय सम्बन्ध का अध्ययन फसल लक्षण फलनों के गुणफल के रूप में

ए० एन० बसु०

मौसम कार्यालय, पूना

सारांश

ऊँचाई, बीच-घेरे तथा भुँड में गन्नों की संख्या इत्यादि फसल लक्षणों के संयुक्त फलन के रूप में ईख की उपज ज्ञात करने के लिये वक्ररेखीय विधि प्रयोग की गयी है। इस अध्ययन से पता चलता है कि ऊँचाई तथा बीच-घेरे के साथ-साथ उपज बढ़ती है तथा इन लक्षणों का मूल्य किन्हीं विशेष संख्याओं से बढ़ जाने पर उपज स्थिर हो जाती है। यह विशेष संख्यायें इस प्रकार हैं—ऊँचाई ३७२ सें० मी० से ४१९ सें० मी० तथा बीच-घेरा ९.५ सें० मी० से ९.६ सें० मी०। इससे यह भी पता चलता है कि अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिये प्रत्येक भुण्ड में गन्नों की संख्या का कोई अनुकूलतम मूल्य होना चाहिये। यह संख्या २ या ३ के बीच होनी चाहिये। इस अध्ययन द्वारा उपज का अनुमान फसल कटने से २ या ३ महीने पूर्व लगाया जा सकता है। उपज तथा फसल लक्षणों के समाश्रयण समीकरण द्वारा उपज में कुल विचरण का ८६ से ८८ प्रतिशत सम्मिलित है।

जबकि परिसर प्राचल पर निर्भर हो तो संभाविता अनुपातीय जाँच का शक्ति फलन

एम० सी० जैसवाल तथा सी० जी० खत्री

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

आर० वी० होग ने थ्रू (य, अ_श) = छ (य)/ज (ऊ_श) जबकि $k \leq y$
 $\leq \text{ऊ}_{\text{श}}$ तथा

श = १, २, ..., स तथा ज (ऊ_श) अ_क^{ऊ_श} छ (य) च य द्वारा वर्णित कुछ
 विशेष अनियमित बंटनों के लिये

जा० : (ऊ_१ = ऊ_२ = ... ऊ_स = ऊ_०, दिया हुआ है) तथा

जा० : (ऊ_१ = ऊ_२, ..., ऊ_स) उपकल्पनाओं की जाँच के लिये सम्भाविता

अनुपातीय जाँच संख्यातियों का संतुलन वंटन प्राप्त किया है।

जा० : (ऊ_१ = ऊ_२ = ... ऊ_स = ऊ_० दिया हुआ है) जबकि स का मूल्य

कुछ भी हो तथा

जा० : (ऊ_१ = ऊ_२ = ... ऊ_स) स = २, ३ तथा ४ उपकल्पनाओं के

जाँचने के लिये सम्भाविता अनुपात जाँच संख्यातियों का अ संतुलन वंटन प्राप्त किया
 गया है तथा स के किसी भी मूल्य के लिये इसका सम्भव मूल्य दिया गया है। यदि
 य का परिसर [ऊ_श, ख (ऊ_श)] हो, जबकि ख (अ), ऊ का दृढ़ रूप से एक दिष्ट

ह्रास मान सतत फलन हो तो यह परिणाम सत्य सिद्ध हुए हैं।